

अनिल कुमार

इतिहास विभाग, आर०बी०जी० आर०  
कॉलेज, महाराजगंज (सिवान)

## नवपाषाण युग - Neolithic Age

SEPTEMBER '07  
S M T W T F S S M T W T F S  
1 2 3 4 5 6 7 8  
9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22  
23 24 25 26 27 28 29 30AUGUST 31  
FRIDAY  
243-122 WEEK-35

प्रागैतिहासिक काल में मानव विकास की सबसे महत्वपूर्ण सीढ़ी नवपाषाण कालीन संस्कृति थी। यद्यपि कालक्रम के हिसाब से यह युग काफी छोटा था परन्तु क्रांतिकारी परिवर्तन इसी युग में हुये। यह निश्चित काना अत्यंत ही कठिन है कि मध्यपाषाण युग का अन्त कब हुआ और नवपाषाण युग का उदय कब हुआ। वस्तुतः मनुष्य ने जिस समय से सुचारु रूप से कृषि कर्म प्रारंभ कर दिया, अर्थात् भोजन संग्राहक से वह भोजन उत्पादक बन गया, उसी समय से नवपाषाण युग का आरम्भ मानना चाहिए। जैसे नव पाषाण युग प्राक्-इतिहास की समाप्ति का काल माना जाता है। जिसमें मांस के साथ-साथ रोटी भी मानव आहार का मुख्य साधन बना।

इस युग के पाषाण हथियार-औजारों में क्षुद्राश्म (Microlith) का बनना जारी रहा और नये प्रकार के हथियार-औजार अस्तित्व में आने लगे। इन्हें घिस कर चिकना बनाया जाने लगा और इनमें मूठ और बेत की व्यवस्था की जाने लगी। जानवरों की हड्डियों से मत्स्य भाँसे, वंशी, हंसियाँ, सूई आदि नये औजार बनाये गये। पाषाण के गड़ासे, कुदाल, काहके डल और चाक निर्मित बर्तन भी अस्तित्व में आने लगे। पत्थर हड्डी और मृण आभूषण, मृणमूर्ति, बर्तन और दीवारों पर चित्रकारी भी अस्तित्व में आये। इस तरह नये हथियार-औजार, उद्योग-तकनीक और कृषि-शिल्प का विकास हुआ। वन्य जीवन समाप्त होने लगा और ग्राम जीवन शुरू होने लगा। अतः नवपाषाण काल



वन्य जीवन में ग्राम जीवन के विकास और प्रसार का  
काल रहा।

पश्चिमोत्तर भारतीय क्षेत्र - भारतीय उपमहाद्वीप  
के पश्चिमोत्तर में कृषक और पशुपालक समाज  
का उदय हुआ। जिसके निर्माता पाषाण के उपकरण  
के साथ-साथ जानवरों की हड्डियों से कृषि उपकरण  
बनाते थे, और गेहूँ, जौ, उपजाते थे, भैंस बकरे  
पालते थे और मिट्टी के दीवारों पर चार-फुस के  
छप्पर से घर बनाते थे। ऐसे कृषक और पशुपालक  
की बस्तियाँ बलुचिस्तान में ही नवपाषाण से लोम पाषाण  
की ओर अग्रसर होने का प्रमाण पूरे बलुचिस्तान, सिन्ध  
और राजस्थान से प्राप्त हुआ है। इसे ही प्राक्छप्पा  
संस्कृति का नाम दिया जाता है, जिससे छप्पा सभ्यता  
का उद्गम हुआ था।

उत्तरी भारतीय नव-पाषाणिक संस्कृति क्षेत्र - इस  
क्षेत्र में कश्मीर चाली की रखा जाता है। कश्मीर में  
बुर्जहोम, गुफकराल, और मार्तण्ड नवपाषाणिक  
संस्कृति के केंद्र थे। बुर्जहोम से नवपाषाण काल में  
के दो अवस्थाओं का पुरावशेष मिला है। इनके

02 Sunday आवास करेवा की कोमल मिट्टी में पड़े  
अण्डा के आकार का होता था। वे चुल्हा और दीवारों  
में तरवा का निर्माण करते थे। खर पत्ता से चटाई  
बनने लगा था और द्वितीय चरण में मिट्टी और  
कटपी ईंट के मकान बनने लगे। दीवारों पर  
चुर्चुरी का रंग गेरुआ होता था। आखेट के हथियार  
में गदा, तीर धनुष, चाक बनने लगे। कृषि उपकरण  
में कुल्हाड़ी, कुदाल और हलिया आदि में आये  
थे लोग जौ, गेहूँ और मूँग की खेती करते थे।



इस तरह कश्मीर घाटी में कृषक समुदाय और बीतियों का उदय होने लगा। गुफकराल और मार्तण्ड में कृषि उपकरण यद्यपि अल्प संख्या में मिले हैं कि यहाँ के पशुपालक घाटी के ऊपर वाले बलियों से पार बनाते थे और बर्जहोम की भाँति ही आवास क्षेत्र के पास ही शवाधान करते थे। स्वामी के साथ उसके कुत को भी शवाधान किया जाता था।

मध्य भारतीय या विन्ध्य क्षेत्र का नव-पाषाणिक संस्कृति-  
यह क्षेत्र गंगा से दक्षिण विन्ध्य का क्षेत्र है बेलन घाटी के किनारे कोलडिहवा और महगड़ा नव-पाषाणिक संस्कृति के प्रमुख केंद्र हैं। कोलडिहवा से एक बस्ती का अवशेष प्राप्त हुआ है। गोलकार मीपड़ी, चूल्हा, गृह सामग्री में शिला-लोदी, हस्त निर्मित वर्तन और गोलदार शीलर के हथिया आँगा आदि के अवशेष मिले हैं। वर्तन की मिट्टी में चान की भूसी मिलाकर बनाया जाता था। प्राप्त सामग्री में लाल मृदभांड सबसे महत्वपूर्ण हैं।

महगड़ा से प्राप्त अवशेषों से स्पष्ट होता है कि विन्ध्य क्षेत्र के कृषक गाय, बैल, हिरण पालते थे और कण्डूआ तथा मखली भी पकड़ते थे। इस तरह लोगों ने शिकार, पशुपालन और कृषि को जीविका का आधार बनाया था। अतः विन्ध्य क्षेत्र की नवपाषाण संस्कृति मिश्रित अर्धजगत्वा के संस्कृति के रूप में पनप रही थी।  
पूर्वी भारतीय या मध्य गंगा घाटी नवपाषाण संस्कृति-  
गंगा घाटी में उत्तरी बिहार में चिरौद (खपरा) और मसुरिया डीह (बेगुसराय) से नवपाषाण युग के अवशेष मिले हैं।